RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

सुभाष चन्द्र बोस एवं भारतीय राष्ट्रीय सेना का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Kavita Rani

Extension Lecturer in History, GC Bahadurgarh (India)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March2019

Keywords
विदेश नीति, राजनय, गुटनिरपेक्षता, कश्मीर समस्या, डोकलाम विवाद, संयुक्त राष्ट्र संघ, परमाणु परीक्षण।

ABSTRACT

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सुभाष चन्द्र ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने 1921 में आई. सी.एस. की नौकरी से त्यागपत्र देकर अपना समस्त जीवन भारत की आजादी के लिए लगा दिया। उन्होंने देश में संघर्ष न छेड़कर विदेश जानकर जर्मनी की मद्द से भारत को आजादी दिलाने का रास्ता चुना। 1943 में वे दक्षिणी पूर्वी एशिया पहुँचे। उन्होंने आजाद हिन्द फौज का अर्थात् भारतीय राष्ट्रीय सेना पुनर्गठन किया और जापान की सहायता से अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से बाहर निकालने के लिए संघर्ष का बिगुल बजा दिया। भेल ही जापान की द्वितीय विश्व युद्ध में पराजय होने के पश्चात् आजाद हिन्द फौज को भी आत्म–समर्पण करना पड़ा हो परन्तु सुभाष के कार्यों से राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई दिशा मिली। उनके महान् त्याग एवं बलिदान से ही उन्हें नेताजी की उपाधि से विभूषित किया गया। गांधी जी ने भी उन्हें देशभक्तों का राजकुमार कहकर पुकारा था।

शोध प्रविधि :– इस शोध पत्र को तैयार करने के लिए आंकड़े/तथ्य द्वितीयक स्त्रोतों से जुटाए गए हैं। इस शोध पत्र में ऐतिहासिक घटनाओं के साथ वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखकर तर्क प्रस्तुत किए हैं जो शोधकर्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों तथा ज्ञान से प्राप्त किए है। ऐतिहासिक, वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों से प्राप्त की गई है।

सुभाष चन्द्र बोस एवं भारतीय राष्ट्रीय सेना

सुभाषचन्द्र बोस का आरम्भिक जीवनः–

सुभाषचन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 में उड़ीसा में कटक नामक स्थान पर हुआ था। वे बंगाली परिवार से संबंध रखते थें। उनके पिता का नाम जानकी नाथ बोस था जो एक सुप्रसिद्ध वकील एवं समाज सेवी थे। उनकी माता प्रभावती देवी एक योगय एवं धार्मिक विचारों वाली महिला थीं। पाँच वर्ष की आयु में सुभाष को बैरिस्टर मिशनरी स्कूल में प्रारम्भिक शिक्षा के लिए भेजा गया। उनकी कुशाग्र बुद्धि से स्कूल के अध्यापक बहुत प्रभावित थे परन्तु उनके अंग्रेज सहपाठी उन्हें निम्न दृष्टि से देखते थे। सुभाष भावुक प्रकृति के थे। अतः वे अंग्रेजों से नफरत करने लगे। तीन वर्ष पश्चात् उन्होंने रेवनशा कालिजिस्ट स्कूल में दाखिला लिया। यहीं से उन्होनं 1913 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। यहाँ उन्होंने विवेकानन्द और रामकृष्ण मिशन की शिक्षाओं का गहरा अध्ययन किया जिनका उनके जीवन पर विशेष प्रभाव पड़ा। मैट्रिक पास करने के पश्चात् उन्होंने कलकत्ता के प्रेजीडेंसी कॉलेज में दाखिला लिया। ऐसा माना जाता है कि एक दिन कॉलेज के प्रोफेसर मि. ओटन ने भारतीयों के विषय में कुछ अपमान जनक शब्द कह दिए। अतः क्रोधित होकर सुभाष ने उस प्रोफेसर को थप्पड़ मार दिया। इस कारण सुभाषचन्द्र बोस को कॉलेज से निष्कासित कर दिया गया।

इसके पश्चात् सुभाषचन्द्र बोस ने 1917 में स्काटिश चर्च कॉलेज में प्रवेश लिया। यहीं से उन्होंने 1919 में बी.ए. ऑनर्स की परीक्षा प्रथम क्षेणी में पास की। इसके पश्चात् वे इंग्लैंड चले गए जहाँ 1920 में उन्होंने आई.सी.एस. की परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त करके उत्तीर्ण की। परन्तु वे अधिक समय तक आई.सी.एस. के पद पर नहीं रहे और उन्होंने इस नौकरी से त्यागपत्र दे दिया।

सुभाषचन्द्र बोस का राजनीति में प्रवेशः–

आई.सी.एस. की नौकरी छोड़ने के पश्चात् सुभाष भारत लौट आए और उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में बढ़ चढ़कर भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। उन्होने गांधी जी द्वारा चलाये गए असयोग आंदोलन में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया परन्तु वे गांधी जी के कार्यक्रम एवं उनकी नीतियों से सहमत नहीं थे। उन्होनें गांधी जी द्वारा आंदोलन को स्थगित करने की भी कटु आलोचना की। इसके पश्चात् सुभाष ने सी.आर. दास को अपना राजनीतिक गुरू बना लियष। सी. आर. दास ने उन्हें नैशनल कॉलेूज कलकत्ता का प्रिंसीपल बना दिया। इसके अलावा उन्हें बांगलार कथा नामक बंगाली साप्ताहिक पत्रिका के संपादन का भी कार्यभार सौंपा गया। जब सी.आर. दास ने गांधी जी से रूष्ट होकर स्वराज्य दल की स्थापना की तो सुभाष को फारवर्ड नामक दैनिक पत्र का संपादक बनाया गया। 1923 में वे कलकत्ता कॉर्पोरेशन के कार्यकारी अधिकारी नियुक्त किए गए। प्रिंस ऑफ वेल्स के बहिष्कार आंदोलन में उन्होंने सक्रिय भाग लिया जिसके कारण उन्हें बंदी बना लिया गया। 1924 में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें बंनाकर मांडले भेज दिया। 1927 में वे बीमार पड़ गए जिसके कारण उन्हें रिहा

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कर दिया गया। 1928 में जिन्ना ने नेहरू रिपोर्ट का विरोध किया और स्वतंत्र ीग की स्थापना कर ली। वे स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए क्रांतिकारी आंदोलन प्रारम्भ करने के पक्ष में थे। इसके अलावा वे मजदूर आंदोलन से भी संपर्क बना कर रखते थे। उन्होंने 1928 में साइमन कमीशन का भी विरोध किया। भारत सरकार उन्हें खतरनाक क्रांतिकारी एंव आतंकवादी नेता मानती थी। 1929 में जब कांग्रेस ने पूर्ण स्वतंत्रता प्रस्ताव पास किया तो इ न्हें कांग्रेस में शामिल कर लिया गया। उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी भाग लिया। परन्तु उन्हें सरकार ने बंदी बना लिया। गांधी इरविन समझौते के पश्चात् उन्हें पुनः रिहा कर दिया। सुभाष ने करांची के कांग्रेस अधिवेशन में गांधी जी के सत्याग्रह के समय उन्हें एक बार फिर बंदी बना लिया गया। 1933–38 के बीच उन्होंने यूरोप की यात्रा की। उन्होंने गांधी जी द्वारा सविन्य अवज्ञा आंदोलन वापिस लेने की कटु आलोचना की।

1938 के हरिपुर कांग्रेस अधिवेशन में नेताजी को कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में अपनी नीतियों की घोषणा की। उनका मानना था कि गांधी जी एक नेता के तौर पर असफल हुए हैं। अतः कांग्रेस को पुनर्गठित करना चाहिए। इससे गांधी जी का सुभाष चन्द्र बोस के बीच मतभेद चरम सीमा पर पहुँच गए।

1939 में कांग्रेस के कुछ नेता सुभाष को पुनः अध्यक्ष बनाना चाहते थे परन्तु गांधी जी इससे सहमत नहीं थे। वे पट्टाभि सीता रमैया को कांग्रेस का अध्यक्ष बनाना चाहते थे। अतः कांग्रेस के अध्यक्ष पर के लिए चुनाव हुआ जिसमें सुभाष बहुमत से भी सर्वाधिक वोटो से बिजयी हुए। इसको गांधी जी ने अपना अपमान समझा और कहा, ''सीता समैया की पराजय मेरी पराजय है।'' कांग्रेस की कार्यकारिणी के कुछ सदस्यों ने भी सुभाषचन्द्र बोस का विरोध किया जिसके कारण सुभाषचन्द्र बोस को अपने पद से इस्तीफा देना पड़ा।

फारवर्ड ब्लाक की स्थापनाः–

कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने के पश्चात् सुभाषचन्द्र बोस ने 3 मई, 1939 को फारवर्ड ब्लॉक की स्थापना कर ली। यह दल गर्मपन्थ में विश्वास रखता था। इस दल में अनेक यवुकों ने भी प्रवेश कर लिया। सुभाष ने जन आंदोलन चलाने के उद्देश्य से पूरे देश का दौरा किया। 19 जुलाई, 1939 को फारवर्ड ब्लाक के सदस्यों ने देश के अनेक स्थानों पर प्रदर्शन किए। इस पर कांग्रेस ने सुभाषचन्द्र बोस पर अनुशासनहीनता का आरोप लगाकर उन्हें कांग्रेस से निष्कासित कर दिया।

द्वितीय विश्व युद्ध व सुभाषः–

1939 में दूसरा विश्व युद्ध शुरू हो गया। सुभाष ने इस अवसर को भुनाने का प्रयास किया। भारत की अंग्रेजी सरकार ने भारत को युद्ध में शामिल कर लिया। सुीाष ने अंग्रेजों के विरूद्ध साम्राज्य विरोधी आंदोलन आरम्भ कर दिया। ब्रिटिश सरकार सुभाषचन्द्र बोस को एक खतरनाक क्रांतिकारी नेता मानती थी। अतः सरकार ने उन्हें 2 जुलाई, 1940 को बंदी बना लिया। उन्होंने जेल से बंगाल के गवर्नर की 26 नवम्बर, 1940 को पत्र लिखा जिसमें उन्होंने कहा, ''व्यक्ति को अपना बलिदान देना चाहिए ताकि राष्ट्र को जीवित रखा जा सके। मेरा मरना अति आवश्यक है ताकि भारत स्वतंत्रता तथा गौरव को प्राप्त कर सके।'' 5 सितम्बर 1940 को सुभाष चन्द्र बोस को रिहा कर दिया गया। परन्तु उनके घर के चारों और पुलिस का महरा पहरा लगा दिया गया।

भारतीय राष्ट्रीय सेना की स्थापना

17 जनवरी, 1941 को सुभाषचन्द्र बोस अचानक ही घर से गायब हो गए। वे काफी मुश्किलों के पश्चात् रहमत खान (भक्त राम) के साथ 31 जनवरी, 1941 को काबुल पहुँचे। वहाँ 18 मार्च 1941 को वी.एल.ए. 7169 नम्बर की कार से अफगान सीमा को पार करते हुए मास्कों पहुँचे। इसके पश्चात् वे 3 अप्रैल को इटली होते हुए बर्लिन पहुँचे। बर्लिन में सुभाषचन्द्र बोस ने हिटलर से भेंट की। वहाँ सुभाष ने आजाद हिन्द रेडियों की स्थापना की। यहाँ वे भारतीयों में अंग्रेजों के विरूद्ध क्रांतिकारी भावनाएँ विकसित करते थें। उन्होंने भारत को स्वतंत्र कराने के लिए रोम, पेरिस तथा जर्मनी आदि में स्वतंत्र भारतीय संघ की स्थापना की। इसके पश्चात् इन्हीं संघों को मिलाकर रास, पेरिस तथा जर्मनी आदि में स्वंतत्र भारतीय संघ की स्थापना की। इसके पश्चात् इन्ही संघों को मिलाकर रास बिहारी बोस ने भारतीय स्वतंत्र लीग की स्थापना की। नेताजी के विचार से जापान भारत की आजादी में ज्यादा सहायक सिद्ध हो सकता है। सौभाग्य से 15 फरवरी, 1942 को सिंगापुर में अंग्रेजी सेनाएँ जापानियों से पराजित हो गईं। इससे सभाष की आशाऐं और अधिक जागृत हो गई। रास बिहारी बोस के प्रयासों से 28 से 30 मार्च 1942 को भारत की राजनीतिक समस्या पर विचार विमर्श करने के लिए टोकियों में एक सम्मेलन बुलाया गया जिसमें एक भारतीय राष्ट्रीय सेना के गठन के लिए प्रस्ताव पास किया गया। इसमें यह भी निश्चित किया गया कि राष्ट्रीय सेना का गठन जून 1942 में बैंकाक में भारतीयों के सम्मेलन में किया जाएगा। इससे पूर्व 15 फरवरी, 1942 को जापान ने सिंगापुर पर अधिकार कर लिया और 4000 भारतीय सैनिकों को बंदी बना लिया और जनरल फ्यूजी हारा को सौंप दिया। उसने सभी कैदियों को कैदी के स्थान पर एशियाई भाई बताया। मोहन सिंह के कहने पर सभी सेथ्नक आजाद हिन्द फौज में शामिल हो गए। पूर्वी प्रदेशों के अनेक भारतीय युवक भी इस सेना में भर्ती हो गए। बैंकाक के सम्मेलन इंडियन इण्डेपेंडेंस लीग व चार सदस्यों की एक

परिषद के विषय में प्रस्ताव पास किया गया और रास बिहारी बोस को इसका सभापति बनाया गया। 1 सितम्बर, 1942 को आजाद हिन्द फौज की विधिवत रूप से स्थापना कर दी गई।

2 जुलाई, 1943 को सुभाषचन्द्र बोस रास बिहारी बोस के निमंत्रण पर सिंगापुर पहुँच गए। 4 जुलाई को रास बिहारी बोस ने आजाद हिन्द फौज अर्थात् भारतीय राष्ट्रीय सेना का कार्यभर सुभाषचन्द्र बोस को सौंप दिया। यहीं से सुभाष को नेताजी के नाम से संबोधित किया जाने लगा। उन्होंने सभी सैनिकों को संबोधित करते हुए कहा कि उन्हें अपने देश को अंग्रेजों से मुक्त कराने के लिए जान की बाजी लगाने को तैयार रहना चाहिए। भारतीय राष्ट्रीय सेना का एक मात्र उद्देश्य देश को अंग्रेजों से स्वतंत्र करना था। उन्होंने कहा कि तुम्हें भारत पुकार रहा है, शस्त्र उठाओं और 'दिल्ली चलो' उन्होंने 'दिल्ली चलो' व 'जयहिन्द' का नारा दिया। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने कहा, ''आज मेरे जीवन में सबसे खास दिन है। आज मुझे इस बात की घोषणा करते हुए बहुत खुशी हो रही है कि भारत को स्वतंत्र कराने की सेना स्थापित हो गई है। यह सेना भारत को अंग्रेजी दासता से मुक्त कराएगी। आज प्रत्येक भारतीय को इस पर गर्व होना चाहिए ि कइस सेना की स्थापना भारतीय नेतृत्व के अधीन हुई है और भारतीय नेतृत्व के अधीन ही यह युद्ध क्षेत्र में कूदेगी। मेरे साथी सिपाहियों आप का नारा दिल्ली चलों होना चाहिए।''

5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के नगरपालिका भवन के मैदान में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज की विधिवत घोषणा कर दी। वे इस सेना के मुख्य सेनापति के तौर पर कार्य करने लगे। इस समय आजाद हिन्द फौज अथवा भारतीय राष्ट्रीय सेना के सदस्यों की संख्या 12000 थी। वहाँ तक कि उनकी सेना में 10000 युद्ध बंदी भी शामिल हो गए। उस समय आजाद हिन्द फौज के सैनिकों की संख्या 50,000 तक पहुँच गई। सुभाषचन्द्र बोस ने इस सेना को पाँच बिग्रेडों में विभाजित किया जो इस प्रकार थी–

(i) सुभाष बिग्रेड– सुभाष बिग्रेड में सिक्ख, पठान आदि सैनिकों की भर्ती की गई इसके कमाण्डर शाहनवाज खान थे।

(ii) गांधी बिग्रेड– गांधी बिग्रेड का कमाडर कर्नल क्याजी को बनाया गया।

(iii) आजाद बिग्रेड– इसका कमांडर कर्नल झुलयारा सिंह थे।

(iv) अन्य बिग्रेड– इसके अलावा नेहरू बिग्रेड तथा झांसी रानी बिग्रेड भी बनाई गई। झांसी रानी बिग्रेड में लगभग 1000 महिलाएँ थीं।

इन बिग्रेडों के सैनिकों के पशिक्षण के लिए मलाया और बर्मा में प्रशिक्षण केन्द्र खोले गए।

अंतरिम सरकार का गठनः–

सुभाषचन्द्र बोस ने सभी भारतीयों को तिरंगा झंडे के नीचे एकत्र होकर स्वतंत्रता के लिए लड़ने को कहा। उन्होंने 23 अक्टूबर, 1943 को सिंगापुर में स्वतंत्र भारत की अंतरिम सरकार भी की। इस अवसर पर उन्होंने कहा, ''अंग्रेजों को भारत से निकालकर भारत को स्वतंत्र कराने के लिए लड़ना अंतरिम सरकार का उद्देश्य होगा। इसके पश्चात् लोगों की इच्छानुसार स्थाई आजाद हिंद सरकार की स्थापना नहीं हो जाती तब तक अन्तरिम सरकार ही शासन संबंधी कायों की देखभाल करेगी।'' सुभाष ने अनेक विभागों की स्थापना की जैसे– (1) स्वास्थ्य एवं सामाजिक कल्याण, (2) स्त्रियों के हितों से संबंधित विभाग, (3) राष्ट्रीय शिक्षा एवं संस्कृति विभाग, (4) पुनर्निर्माण विभाग, (5) सप्लाई, (6) प्रवासी, (7) आवास एवं यातायात आदि।

कुछ ही दिनों पश्चात् जापान, जर्मनी, इटली, कोरिया, बर्मा, थाईलैंड़, राष्ट्रवादी चीन, फिलोपाइन, मंचूरिया आदि देशों ने अंतरिम सरकार को मान्यता प्रदान कर दी। 6 नवम्बर, 1943 को जापान ने अंडेमान व निकोबार जीतकर नेताजी की सरकार को सो।प दिए। नेताजी ने उनके नाम शहीद एवं स्वराज्य रखे।

भारतीय राष्ट्रीय सेना के अभियानः–

सुभाषचन्द्र बोस ने 23 अक्टूबर 1943 को आधी रात अर्थात् 12:55 मिनट पर अंग्रेजों और उनके मित्र राष्ट्रों के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। यूनान में उन्होंने अपने सैनिकों को संबोधित करते हुए कहा ''यह युद्ध निर्णायक होगा और इसमें आजाद हिंद फौज की जीत होगी।'' उन्होंने भारतीयों से त्याग और बलिदान के लिए तैयार रहने को कहा।

3 फरवरी, 1944 को सुभाष बिग्रेड को बर्मा मोर्चे पर रंगून से यूरोप के लिए भेजा। इस बिग्रेड ने अंग्रेजी सैनिक दुकड़ियों को अनेक स्थानों पर पराजित कर दिया और पेलटवा, डेलटमी और मोडोक आदि आदि स्थानों को विजित करते हुए भारतीय सीमा में 1 मई, 1944 को प्रवेश कर लिया। इसी समय रसद् सामग्री की कमी महसूस होने लगी। जापानी सैनिक मोडोफ से वापिस जाना चाहते थे परन्तु आजाद हिन्द फौज पीछे हटने को तैयार नहीं थी। उन्होंने कहा ''हमारा लक्ष्य दिल्ली का लाल किला है। हमें दिल्ली पहुँचने का हुक्म मिला है। अतः हमारे लिए पीछे हटना संभव नहीं है।'' अतः जापानियों ने मोडोक चौकी को कैप्टन सूरजमल (हरियाणा का रहने वाला) को प्रदान कर दिया और स्वयं पीछे हट गए। भारतीय राष्ट्रीय सेना ने दूसरी एवं तीसरी बटालियन ने हाका एवं पालम चौकियों का पबन्ध भी जापानियों से अपने हाथों में ले लिया। इसके पश्चात् आजाद हिन्द फोज ने कलांग–कलांग की चौकी पर भी अधिकार कर लिया। अराकान अभियान में भी

RRIJM 2015, All Rights Reserved

जापानी सेना ने आजाद हिन्द फौज की सहायता से अनेक सफलताएँ प्राप्त कीं। उन्होंने हवाई जहाज से कॉम्स बाजार, वावली बाजार व चिटगांव पर गोलाबारी की और अंग्रेजी सेना को भारी क्षति पहुँचाई।

मार्च 1944 को जापानी सेना ने आजाद हिन्द फौज अर्थात् भारतीय राष्ट्रीय सेना की सहायता से कोरिया पर आक्रमण कर 8 अप्रैल का वहाँ के किले पर अधिकार कर लिया। इसी समय आजाद हिन्द फौज को इम्फाल पर विजय प्राप्त होने पर ब्रह्मपुत्र नदी को पार करके बंगाल पहुँचने का आदेश दिया गया। आजाद हिन्द फौज ने इम्फाल को चारों ओर से घेर लिया। इस समय अंग्रेजों के पास लगभग 150000 सैनिक थे। मेजर प्रीतम सिहंह के नेतृत्व में आई.एन.ए. के 300 सैनिकों ने फलेल हवाई अड्डे पर धावा बोल दिया। अंग्रेजों ने भी जवाबी कार्यवाही में हवाई हमला कियां अतः आजाद हिन्द फौज के 300 सैनिक शहीद हो गए। परनतु आजाद हिन्दू फौज ने अंग्रेजों से लगभग 250 वर्ग मील क्षेत्र स्वतंत्र करा लिया। इसी समय अमेरिका ने युद्ध में गतिविधियाँ तेज कर दी जिससे जापान को बर्मा के मार्चे से अपने सेनिक हटाने पड़े। अतः दक्षिणी–पूर्वी एशिया में युद्ध का पाशा पलट गया। दूसरी और दुर्भाग्य से बरसात के आरम्भ होने व रसद सामग्री की कमी होने से अनेक सैनिक मृत्यु के शिकार हो गए। अतः इम्फाल पर अधिकार नहीं किया जा सका। आजाद हिन्द फोज ने पूर्व एशिया में भारतीयों को धन देने की अपील की। केवल 24 घंटों में ही 1 करोड़ 32 लाख रूपये एकत्र कर लिये गए। 25 अक्टूबर, 1944 को जलांर बसेर की रैली से 7 लाख मिलियन डॉलर एकत्र किए गए। इसके अलावा हवुर्वरहमान ने एक करोड़ रूपये तथा एक गुजराती महिला श्रीमति बताइनी देवी ने 3 करोड़ रूपये आजाद हिन्द फौज को चंदा के तौर पर प्रदान किए। सुभाष चन्द्र बोस ने इस धन को सुरक्षित रखने के लिए आजाद हिन्द फौज (भारतीय राष्ट्रीय सेना) की स्थापना की।

1945 तक युद्ध की स्थिति में पूर्णतयः परिवर्तन आ गया। जर्मनी ने पराजित होकर मित्र राष्ट्रों के समक्ष आत्म–समर्पण कर दिया। अमेरिका ने जापानी नगरों हिरोशिमा एवं नागासाकी पर एटम बम बरसाए जिससे विवश होकर 10 अगस्त को जापान में मित्र राष्ट्रों के समक्ष आत्म–समर्पण कर दिया। इससे आजाद हिन्द फौज को भी अंग्रेजों के समक्ष आत्म–समर्पण करना पड़ा।

सुभाष की मृत्यु :–

जापानी आत्म–समर्पण की सूचना प्राप्त होते ही सुभाषचन्द्र बोस 16 अगस्त, 1945 को बैंकाक तथा 17 अगस्त को साईगोन पहुँचे। 17 अगरत, 1945 को वे वियतनाम पहुँचे जहाँ हवाई अड्डे पर उन्होंने रात गुजारी। 18 अगस्त, 1945 को जहाज के द्वारा वे टोयों रवाना हुए परन्तु रास्ते में ही हवाई जहाज दुर्घटना ग्रस्त हो गया जिससे उनकी मृत्यु हो गइ। परन्तु आज भी नेताजी की मौत का रहस्य बना हुआ है जिसको सुलझाने के लिए 1965 में शाहनवाज कमेटी तथा 1970 में खोसला समिति गठित की गइ। इसके पश्चात् मुखर्जी आयोग गठित किया गया।

भारतीय राष्ट्रीय सेना मुकद्दमाः–

भारतीय राष्ट्रीय सेना के आत्म वमर्पण के पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने उसके अधिकारियों व सैनिकों को बंदी बना लिया जिनमें सहगल, ढिल्लों और शाहनवाज खां प्रमुख थे। सरकार ने उन्हें लाल किले में बंद कर दिया और उन पर देशद्रोह का मुकद्दमा चलाया। इससे देश का माहौल गरमा गया। भारतीय राष्ट्रीय सेना की सुरक्षा के लिए कांग्रेस ने 9 सदस्यों की एक समिति बनाई जिसमें जवाहर लाल नेहरू, तेज बहादुर सप्रू, भूला भाई देशाई, डॉ. के. एन. काटुजा, आसफ अली, कंवर दलीप सिंह, राय बहादुर वादड़ी टेकचंद तथा पी. के. सेन सम्मिलित थे।

5 नवम्बर, 1945 को आजाद हिंद फौज अर्थात् भारतीय राष्ट्रीय सेना के मुकद्दमें की सुनवाई आरम्भ हुई। इस समय लाल किले के बाहर एक विशाल भीड़ एकत्र हो गई। उन्होंने नारा लगाया 'आजाद हिन्द फौज को बचाओं। आजाद हिन्द फौज देशद्रोही नहीं है।' इसके अलावा जयहिन्द के नारे लगाए गए। परनतु अंग्रेजी सरकार ने कैप्टन शाहनवाज खां, कैप्टन प्रेमकुमार सहगल तथा लैफ्टिनेंट गुरबख्श सिंह को दोषी ठहराया परन्तु जनता विरोध के कारण सरकार को झुकना पड़ा और इन तीनों को रिहा कर दिया गया।

निष्कर्षः–

उपयुक्त वर्ण के आधार पर कहा जा सकता है कि सुभाषचन्द्र बोस भारत के एक महान सूपत थे। उन्होंने भारत को आजाद कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी आजद हिन्द फौज अथवा भारतीय राष्ट्रीय सेना के सैनिकों का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। भले ही सुभाषचन्द्र बोस भारत की आजादी को न देख सके हों फिर भी आखिरकार उनका सपना साकार हुआ।

सन्दर्भ सूची :

1. रमेशचन्द्र दत्त : इंडिया इन दि विक्टोरियस ए (कीमन पाल, लंदन), पृ0 456–457.
2. रमेश चन्द्र मजूमदार : हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, पृ0 4
3. जोगेशचन्द्र बागल : हिस्ट्री ऑफ दी इंडिया एसोसिएशन, कलकत्ता, पृ0 212
4. सुरेन्द्र नाथ बनर्जी : ए नेशन इन मेकिंग, पृ0 190
5. रमेश चन्द्र मजूमदार : हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, पृ0 13
6. सुरेन्द्र नाथ बनर्जी : ए नेशन इन मेकिंग, पृ0 196
7. रमेशचन्द्र मजूमदार : हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, पृ0 25
8. डॉ. पट्टाभी सीतारमैया : दि हिस्ट्री ऑफ दि इंडियन नेशनल कांग्रेस, भाग 1 (पद्मा पब्लिकेशन, बम्बई, 1946), पृ0 41
9. वही, पृ0 40
10. रमेशचन्द्र मजूमदार : हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, पृ0 47
11. आई.बी. रिकाईस, एल नं0 476/193, पृ0 1–12 हरिदास मुखर्जी और उमा मुखर्जी, ए ऑफ दि स्वदेशी मूवमेंट, पृ0 236
12. इंडियन नेशनल कांग्रेस(1905) की रिपोर्ट, भूमिका, पृ0 25
13. मजूमदार और मजूमदार : कांग्रेस एण्ड कांग्रेसमैन इन दि प्री–गांधीयन हरा : 1885–1917 (फॉर्मके एल मुखोपाध्याय, कलकत्ता, 1967), पृ0 59

RRIJM 2015, All Rights Reserved